भारतीय भाषा दर्शन

- एक विश्लेषणात्मक दृष्टि -

Indian Philosophy of Language

– An Analytical Perception –

देवेन्द्र नाथ तिवारी

भाषा भावाभावसाधारण है । सभी ज्ञान, सम्प्रत्यय या विचार भाषानुविद्ध होते हैं और इसीलिए भाषा का विश्लेषण सम्प्रत्यय, ज्ञान, अर्थ या विचार का भी विश्लेषण होता है। मूल्यमीमांसीय (axiological) दृष्टि से ज्ञान परम मूल्य है। बोधमूलक (cognitive) दृष्टि से ज्ञान प्रकाश है, चेतन-प्रकाश है; यह शब्द-प्रकाश है, ज्ञान है जो स्वयं का एवं विषयों का भी प्रकाशक है। भाषा ही ज्ञान और विचारों की निर्धारक है। ध्वन्यात्मक दृष्टि से यह वैखरी शब्द है जो बाह्य पदार्थों का संकेतक तथ स्फोट शब्द की अभिव्यक्ति का हेतु है। अखण्ड शक्तिरूप होने से इसे शब्द कहा जाता है। यह हमारे कर्मों/कर्त्तव्यों का प्रेरक है। तत्त्वमीमांसीय (metaphysical) दृष्टि से यह सत्य, परमार्थ सत्य है और सत्यानुसन्धान का एकमात्र विषय है। ज्ञान से आत्मैक्य प्राप्त करना मानव जीवन का परम लक्ष्य है।

सभी सम्प्रत्ययात्मक ज्ञान भाषा से प्रकाशित होते हैं और भाषा से अनुविद्ध होते हैं। शब्द का तात्त्विक आधार, शब्द-शक्ति, शक्तिग्रह, भाषा की मूल इकाई, ध्वन्यात्मक शब्द, स्फोट शब्द, अर्थ, अर्थ के प्रकार — मुख्य, गौण तथा नान्तरीयकार्थ — विभिन्न प्रकार के अर्थों के निर्धारण के उपाय, भाषा और अर्थ के बीच पारस्परिक सम्बन्ध, वाक्य–वाक्यार्थ तथा शाब्दबोध, इस पुस्तक के आरम्भिक भाग का प्रमुख प्रतिपाद्य है। *वाक्यपदीय* खण्ड एक तथा दो की सभी दार्शनिक समस्याओं पर विभिन्न भारतीय सम्प्रदायों के विचारों का समीक्षापूर्वक निर्णयात्मक विवेचन इस पुस्तक में किया गया है।

वाक्यपदीय के तृतीय खण्ड में विवेचित समुद्देशों यथा जाति पदार्थ, व्यक्ति पदार्थ, सम्बन्ध, साधन, वृत्ति, पुरुष, संख्या, देश, काल, क्रिया की अवधारणाओं पर विभिन्न भारतीय सम्प्रदायों के विचारों की समीक्षापूर्वक प्रस्तुति इस पुष्तक में की गई है। पुस्तक की भाषा सरल है और प्रस्तुति शास्त्रानुसारी होलिस्टिक (holistic) विधा से की गई है। यह पुस्तक अध्येताओं के दार्शनिक ज्ञान की अभिवृद्धि करने तथा भाषा दर्शन के अध्ययन के प्रति उनकी रूचि बढ़ाने में निश्चित रूप सें सफल होगी।

Cataloging in Publication Data — DK

[Courtesy: D.K. Agencies (P) Ltd. <docinfo@dkagencies.com>]

Tiwari, Devendra Nath, author.

Bhāratīya bhāshā darśana : eka viśleshaṇātmaka dṛshṭi = Indian philosophy of language : an analytical perception / Devendra Nātha Tivārī. – Prathama saṁskaraṇa.

pages cm

In Hindi.

On the philosophy of Indic languages.

ISBN 9788124612514 (hardback)

ISBN 9788124612521 (paperback)

1. India – Languages – Philosophy. 2. Philosophy, Indic. I. Title. II. Title: Indian philosophy of language.

LCC PK107.T59 2024 | DDC 491.1 23

ISBN : 978-81-246-1251-4 (सजिल्द)

ISBN : 978-81-246-1252-1 (अजिल्द)

© देवेन्द्र नाथ तिवारी (ज॰1955)

प्रथम संस्करण, 2024

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का किसी भी रूप में पुनर्मुद्रण, या किसी भी विधि – जैसे इलेक्ट्रॉनिक, यान्त्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या कोई अन्य विधि – से प्रयोग या किसी ऐसे यन्त्र में भण्डारण, जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो, कॉपीराइट धारक एवं प्रकाशक की पूर्वलिखित अनुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

मुद्रक एवं प्रकाशक

डी॰के॰ प्रिण्टवर्ल्ड (प्रा॰) लि॰

पंजीकृत कार्यालय : "वेदश्री", एफ-395, सुदर्शन पार्क

(मेट्रो स्टेशन : ई॰एस॰आइ॰ हॉस्पिटल), नई दिल्ली - 110015

फोन : (011) 4172 2626, 98713 94815

ई-मेल : indology@dkprintworld.com

वेब : www.dkprintworld.com

लेखक, पूर्व वरिष्ठ प्रोफेसर (2018-21), दर्शन और धर्म विभाग, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी और वर्तमान में आई॰सी॰पी॰आर॰, नई दिल्ली के एक वरिष्ठ फेलो (2022-24) हैं जो मूल्यों और नैतिकता की भारतीय धारणा पर अपनी परियोजना के लिए काम कर रहे हैं। उन्होंने बी॰एच॰यू॰ से बी॰ए॰ (1975), एम॰ए॰ (1977) और पीएच॰डी॰ (1980) में की और बी॰एच॰यू॰ के दर्शन और धर्म विभाग में व्याख्याता (1981-88), दर्शनशास्त्र विभाग, एल॰एन॰ मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, में रीडर (1988-96) और प्रोफेसर (1996–2007) के रूप में अपना कार्य शुरू किया। वह एम॰जी॰आई॰, मॉरीशस, में भारतीय दर्शन और संस्कृत (2014-17) के आई॰सी॰सी॰आर॰ प्रोफेसर रहे । वर्तमान में वे मार्च 2024 से सेण्ट पिटर्सबर्ग स्टेट यूनिवर्सिटी, रशिया में आई॰सी॰सी॰आर॰ चेयर पर भारत अध्ययन के विजिटिंग प्रोफेसर के पद पर प्रतिनियुक्त हैं। उन्हें सामान्य रूप से संस्कृत में दर्शन ग्रन्थों के और विशेष रूप से भाषा दर्शन एवं विश्लेषण के अपने ज्ञान के लिए व्यापक रूप से जाना जाता है।

उनके 130 से भी अधिक शोध-पत्र राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय फिलॉसफ़ी के विभिन्न जर्नल्स में प्रकाशित हुए हैं। वे कई राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय पत्रिकाओं के सम्पादकीय सदस्य हैं, जिनमें *फिलॉसफ़ी ऑफ़ ईस्ट-वेस्ट थॉट* (कैलिफोर्निया, यू॰एस॰ए॰), और *कल्चुरा इण्टरनेशनल जर्नल ऑफ़ फिलॉसफ़ी ऑफ़ कल्चर एण्ड एक्सियोलॉज़ी* (पीटर लैंग प्रकाशन, जर्मनी) शामिल हैं।

उनकी पुस्तकों में आई॰सी॰पी॰आर॰, नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित *द सेण्ट्रल प्रॉब्लम्स ऑफ़ भर्तृहरि'ज़ फिलॉसफ़ी* (2008), *लैंग्वेज़, बीइंग एण्ड कॉग्निशन* (2014, द्वितीय संस्करण : 2021, ग्लोबल विजन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली), *डायनामिक्स ऑफ़ लैंग्वेज़ : फिलॉसफ़ी ऑफ़ द वर्ल्ड ऑफ़ द वर्ड्स* (2022, डी॰के॰ प्रिण्टवर्ल्ड, नई दिल्ली द्वारा दो खण्डों में प्रकाशित पहला भारतीय संस्करण) तथा *दर्शन का स्वरूप : विषय-वस्तु और प्रतिदिन जीवन में इसकी उपयोगिता* (2024, डी॰के॰ प्रिण्टवर्ल्ड, नई दिल्ली) प्रमुख हैं। इसके अतिरिक्त आपने अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका *ईस्ट-वेस्ट थॉट*, कैलिफोर्निया, यू॰एस॰ए॰ के दर्शन के तीन अंकों (2016, 2018, 2022) का सम्पादन भी किया है।

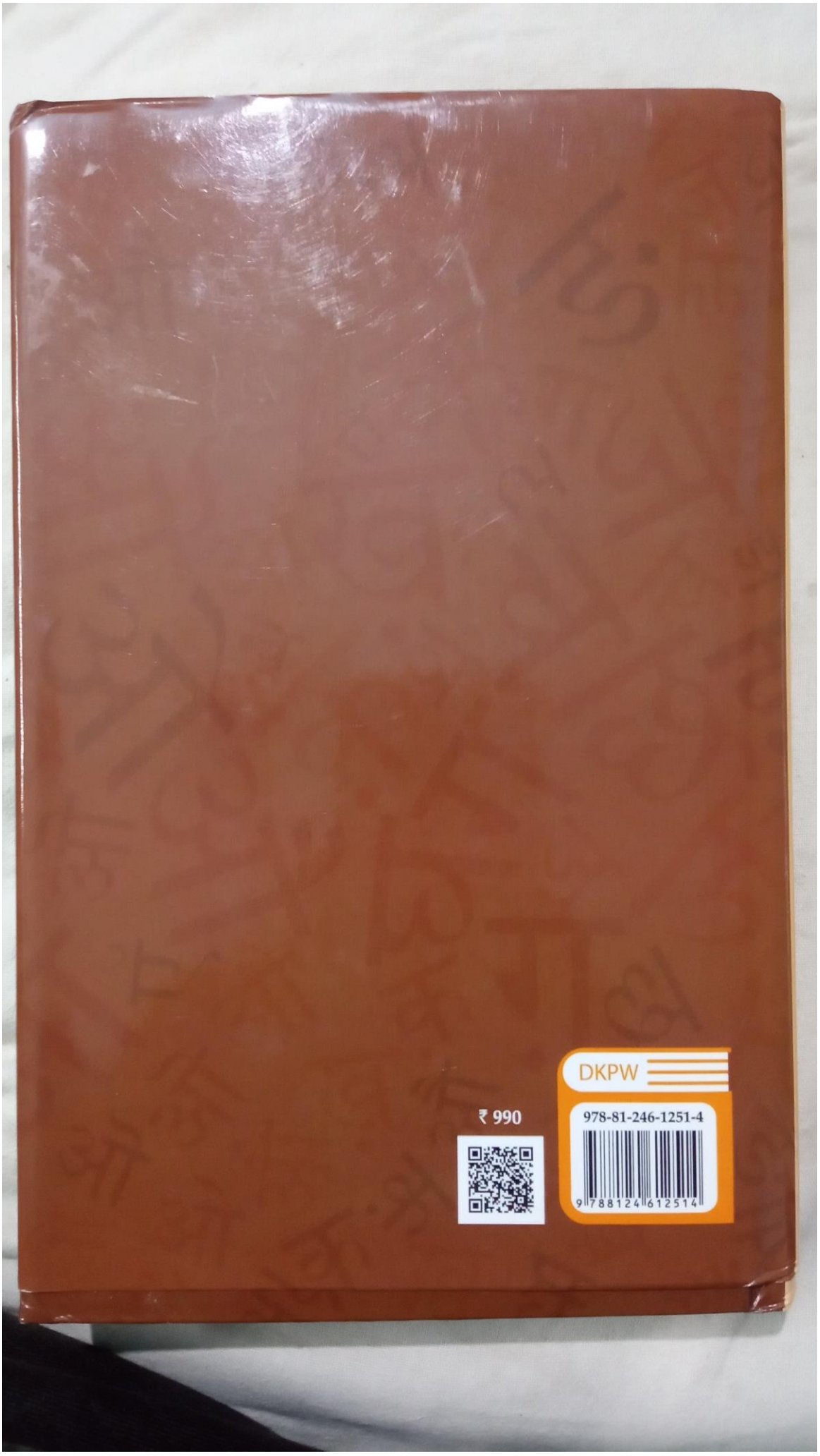
₹ 990
DKPW
978-81-246-1251-4